


ORCHID

AUSA

2020

MAKE IN INDIA

आत्मनिर्भर
भारत



साफ सुथरी ज़बान है हिंदी
खुश-बयानी की जान है हिंदी

युवपंख

हिंदी विभाग

- सौंदर्या कौंडा
- प्रसन्न हणमगांव

1	Prof. Ingale M.
2	Prof. Mulmane S. R.
3	Prasanna Hanamgaon TE ELECTRICAL
4	Soundarya Konda BE CSE
5	हिंदी विभाग
6	Guruprasad Patil TE Civil
7	Shivani Darekar BE CSE
8	Ritika Nora TE CSE
9	Shiriwas Bangul TE CSE

युवाओं का विचार देश की अखंडता, देश का विकास, देश की परिभाषा बतलाती है। एक युवा हों के नाते मेरा कर्तव्य है की, देश कि अखंडता, विकास और परिभाषा मेरे विचारों के पंखों से उडान भरे और हो सके तो अपने विचारों से सबके दिल में देशभक्ती की आग जलाऊ।

मुझे यकीन है अपने लपड़ों के हुनर पर,
कि लोग मेरा चेहरा भुला सकते हैं पर बातें नहीं।

'युवापंख' सिर्फ युवाओं के विचारों तक शिमीत नहीं है, वह युवाओं का कर्तव्य, उनका सामर्थ्य और अपने देश के प्रति उम्मीदों का एक भांडार है।

इसी उम्मीदों के संगम को युवाओं के पंखों से यानि की विचारों के सहारे आपके सामने प्रस्तुत कर रह है। हमारा प्रयत्न है, की वतन का विकास रुपी यान युवाओं के विचारों से उडान भरे और उसकी उडान की चमक से सारा हिंदुस्थान रोशन हो जाए।

भारत के युवा बदलेंगे भारत की तरवीर !

CONTENTS

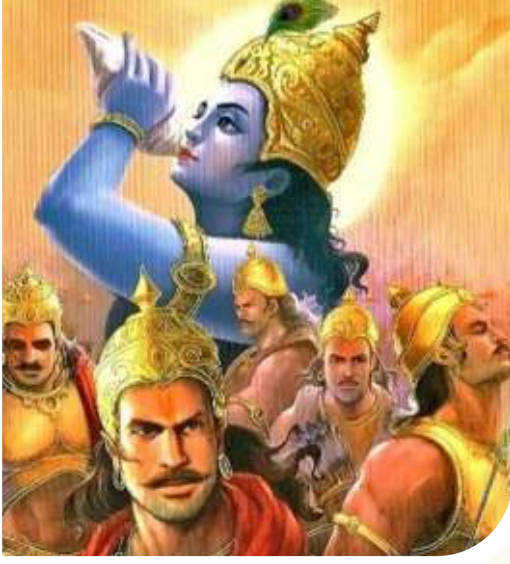
HINDI SECTION

--: युवपंख :-

- 26 महाभारत
मेरे दृष्टीकोन से...
प्रसन्न हणमागाव
- 27 कोरोना के योद्धा
सौंदर्या कोंडा
- 28 भारतीय किसान
गुरुप्रसाद पाटील
- 29 आत्मपरिचय
अभिनय चव्हाण
- 30 प्रेरणा: सही या गलत?
प्रतिक हणमगांव
- 31 जिन्दगी क्या है?
गुरुप्रसाद पाटील
- 32 DEAR जिंदगी
रितिका नोरा
- 33 कुछ बातें.....
शिवानी दरेकर
- क्या हम अपना जीवन
- 34 समझदारी से जी रहे हैं?
श्रीनिवास बंदगुल
- 35 सर्वश्रेष्ठ धनुंधर: कर्ण
शिवानी दरेकर

--: स्वप्नप्रधुन :-

- 39 फसाना
अभिनय चव्हाण
- 39 पीड़ित की आपदा
गुणजा लिगडे
- 40 मुसाफिर
मनोज शिंदे
- 40 लाखों में हजारों में
मेरी एक प्यारी बहना हो
पद्मावती पाटिल
- 41 कोई सोच नहीं
प्रसन्न हणमगाव
- 41 कोरोना
प्रिया कानडे
- 42 हौसला है मुझ में
श्रीनिवास बंदगुल
- 42 आदत...
रुनेहा कैरमकोन्डा
- 43 सपना
सौंदर्या कोंडा
- 43 रुह
विनीत पलगंटी



महाभारत मेरे दृष्टिकोण से...



प्रसन्न हणमगांव
TE E&TC

इस लेख में महाभारत पर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया है धर्म की स्थापना करने हेतु चुना गया वो कुरुक्षेत्र उस दिन रक्तों के अंगारों में लिपटा पड़ा था। सारे महायुद्धों ने अपने जीवन को उस धर्मयुद्ध के प्रति समर्पित किया था। वही धर्मयुद्ध, जो लाखों लोगों के मृत्यु का कारण बन गया। यह कहानी उस सच कि है, जिनके कारण इस धर्मयुद्ध के साक्षीदार आप और मैं बन गए। उन्हें ही दुंदुते हुए मैं लिखने का प्रयास कर रहा हूँ।

कहीं बार हम अपने कठिनाइयों को देखते जरूर है, लेकिन उसे समझने में गलती कर बैठ देते हैं, उसी प्रकार आप जब महाभारत का महायुद्ध किसके कारण हुआ? इसका जवाब समझने की कोशिश करेंगे, तो आपको महाभारत के हर पात्र इसके हकदार दिखेंगे। मुझे बहुत लोगों ने कहां की, द्रौपदी का वस्त्रहरण इसका मुख्य कारण है, कोई कहता है की भगवान कृष्ण के कारण, कोई महाराज धृतराष्ट्र के कारण, तो कोई कहता है की महाराणी कुंती।

लेकिन आप जब महाभारत को समझने की कोशिश करेंगे, तो शायद इसका जवाब आपको मिले। मेरे दृष्टिकोण से महाभारत का महायुद्ध तीन महाराथियों के कारण हुआ और वो थे, गंगापुत्र भिष्म, महागुरु द्रोण और अंगराज कर्ण। अब आप कहेंगे की यह कैसे संभव है, आइए इसका भी जवाब दुंदुते कि कोशिश कर लेते हैं।

गंगापुत्र भिष्म ने हस्तिनापूर के सिंहासन के प्रति अपना सामर्थ्य और विश्वास को समर्पित किया था। ऐसे कई अवसर उन्हें प्राप्त हुए, जिसके कारण महायुद्ध टल सकता था। इस महायुद्ध की शुरुवात तो उसी दिन हुई थी, जिस दिन महाराज पांडू के मृत्यु के बाद पांडव हस्तिनापूर लौट आए थे। उसी समय भिष्म, कौरव - पांडवों के बिच का फासला मिटा सकते थे, लेकिन उन्होंने उसके लिए प्रयास नहीं किया और एक ओर बात यह की, पांडवों को युद्ध करने का अनुरोध भी महामहिम भिष्म ने ही किया था।

बहुत लोगों का यह मानना है की, द्रौपदी का वस्त्रहरण एक मुख्य कारण है, लेकिन मेरा एक प्रश्न है, यदि द्रौपदी ही ना होती तो? आप कहेंगे यह कैसा प्रश्न है? आप द्रौपदी के जन्म रहस्य को जानने कि कोशिश करेंगे तो इसका भी जवाब आपको

मिल जाएगा, क्योंकि गुरु द्रोण ने अपने शिष्यों को पांचाल पर आक्रमण करने का आदेश दिया था और उस युद्ध में हारने के बाद राजा द्रौपद ने उसका प्रतिशोध लेने हेतु महायज्ञ करके द्रौपदी और धृष्टद्युम्न को जन्म दिया था। थोड़ा तनिक सोचिए, यदि महागुरु द्रोण ने अपने शिष्यों को पांचाल पर आक्रमण करने का आदेश ही न दिया होता, तो शायद द्रौपदी का जन्म ही ना होता और शायद आगे जाके वस्त्रहरण भी न होता, इसलिए मुझे लगता है, उनका एक आदेश महायुद्ध कि ओर का सबसे बड़ा कदम था।

युवराज दुर्योधन को अपने मित्र अंगराज कर्ण के सामर्थ्य पर बड़ा गर्व था। कर्ण के सामर्थ्य पर ही दुर्योधन ने युद्ध करने का साहस किया। वो कहते हैं ना, यदि हाथीपर बैठा हुआ श्वान हाथी के सामर्थ्य पर वन के राजा पर भौकता है तो दोष श्वान का नहीं, दोष हाथी का होता है जिसने अपने सामर्थ्य का आधार उस श्वान को दिया। ठीक उसी प्रकार कर्ण का सामर्थ्य युवराज दुर्योधन के अधर्म का आधार था। यदि कर्ण का सामर्थ्य युवराज दुर्योधन का आधार नहीं होता तो शायद युद्ध की संभावना कम थी।

महाभारत को अच्छाई और बुराई में कभी मत बाटना, क्योंकि मनुष्य उन दोनों गुणों के साथ बंधा हुआ है। मनुष्य अपने अच्छे कर्मों के साथ बुरे कर्म भी करता है, और उसके आधार पर ही उसे उसका फल प्राप्त होता है।

महाभारत कोई कथा नहीं, यह आपकी, मेरी और सारे मनुष्य का जीवन का सार है। मनुष्य का अहंकार, उसका सामर्थ्य, उसकी करुणा मनुष्य को दुर्बल बनाती है। जब भी आप खुद को दुर्बल बनते देखेंगे उसी समय अपने भावनाओं से उपर उठकर, उनपर विजय प्राप्त करें और अपने जीवन का आनंद उठा लें।



6 feet



कोरोना के योद्धा



सौंदर्या कोंडा
BE CSE

कोरोना के योद्धा
कोरोना के इस संकट पर देश और पूरी
दुनिया का रक्षण करने वाले **The Unsung
Heros** चिकित्सक, नर्सस, पोलिस है।

जैसे की सभी को पता है की, दुनिया में कोरोना वायरस का संकट आया है। सभी देशो का कहना है की , ये भयानक वायरस चीनी के वुहान शहर से पूरी दुनिया में फैला हुआ है। इस वायरस के वजह से पूरी दुनिया चीनी पर आरोप कर रहे है। मगर चीन इस बात को मानने के लिए राजी है। इस वायरस को उजतखऊ - १९ यह से पुरे दुनिया में कहा जाता है। ये वायरस अब तक की सबसे भयानक वायरस मिल गया है। अभी तक इस वायरस पर कोई भी इलाज न मिला ही है। सब में हमें एकजुट रहना बहोत जरूरी है। ये वायरस एक दूसरे से हाथ मिलने से फलती है। थकन के अनुसार ये वायरस इतनी जल्दी, हम सभी को बहोत ध्यान से रहना होगा।

कोरोना के इस संकट पर देश और पूरी दुनिया का रक्षण करनेवाले " *The unsung Heros*" चिकित्सक, नर्सस, पोलिस है। COVID- 19 का संकट है, उन्हें इस वक्त का फिक्र नहीं है , वे आपनी जान दाव पर लगाकर काम कर रहे है। उन्हें बस इस बात का फिक्र है की, मेरे देश के लोग सुरक्षित और अच्छे रहे। इसलिए आज की दुनिया में डॉक्टर ही भगवान के रूप में लोगो को बचा रहे है। ये असल में *Corona Warriors* जो की *Hulk, Iron Man, Spider Man,* और *Thor avengers* से भी बहुत बड़े योद्धा है। आज पूरा युग उनकी

प्रशंसा करने के लिए तैयार है। वो दिन - रात बिना थके काम कर रहे है।

डॉक्टरों के साथ साथ हमारे नर्सस, पुलिस , सफाई कर्मचारी और ऐसे अनेक लोग जो इस संकट से मुकाबला कर रहे है। हम सभी देशवासियों फर्ज बनता है की हम हमेशा उनका साथ दे और सन्मान करे।

इसके साथ हमारा एक और छोटासा काम ये है की, वे सभी से बताये गए नियमो का पालन हमेशा करे। ये सभी हमारे हीरोज रोज कोरोना से लड़ने घर से निकलते है तो हमें इन घर के सभी सदस्य का खयाल रखाना है। उन्हें किसी भी तरह की मदत लगे तो बेझिजक करना चाहीँ।

आजकल अखबार में बहुत डॉक्टरों की अच्छी कार्यों के बारे में बता रहे है। लेकिन डॉक्टरों का यही कहना होता है की, *as long as I'm Healthy able to offer it I will do it* यह हमारे लिए अभिमान का हिस्सा है। कोरोना की बजह से दुनियाभर में युद्ध जैसी स्थिती बनी हुई है। सभी ओर अँधेरा छाई है। इन सब में हम सभी लोग डॉक्टरों, पुलिस, सफाई कर्मचारी इन सभी की कुरबानी और निष्ठा में जगमगा रहे है। भगवान नें जीवन दिया , माँ- बाप नें जन्म दिया मगर डॉक्टरों नें उस जीव और जन्म का मतलब और महत्व सभी को बताया है। लोगो के दिमाग, शरीर और मन की देखभाल और इन्सानियत का प्रत्यक्ष रूप दर्शाती है।

Continue on Page No. 36





भारतीय किसान



गुरुप्रसाद पाटील
TE Civil

हैं घर फूस की झोपड़ियाँ, इनमें जीवन पलता है।
दिन-रात परिश्रम में पिसता, टुकड़ों में मानव पलता है।
*भारतीय किसान इस लेख में भारतीय किसान
की आत्मकथा और महत्व बताया है।*

महात्मा गांधी ने कहा था भारत का हृदय गांवों में बसता है। गांवों में ही सेवा व परिश्रम के अवतार किसान बसते हैं। ये किसान ही नगरवासियों के अन्नदाता हैं। सृष्टि के पालक हैं। गांवों की उन्नति से ही भारत की उन्नति हो सकती है। भारतीय किसान को देखकर यह सूक्ति बरबस ही आ जाती है:

सादा जीवन उच्च विचार। यह है देखो भारतीय किसान।

सचमुच में भारतीय किसान भारतीयता का सच्चा प्रतिनिधि है। उसमें भारत की आत्मा निवास करती है। यह कड़वा सच है कि घोर परिश्रमी और सीधा सादा होने के बावजूद भी भारतीय किसान की जीवन दशा बड़ी ही दुःखद है। उसका सम्पूर्ण जीवन जोखिम भरा है। उसके जीवन का एकमात्र आधार कृषि की बड़ी ही शोचनीय दशा है। ऐसा इसलिए उस पर कभी न कभी कोई न कोई प्राकृतिक आपदाओं के बादल मंडराया करते हैं।

कभी अतिवृष्टि से तो कभी अनावृष्टि की मार उसे सहनी पड़ती है। इसी तरह कभी उपलवृष्टि से तो कभी बाढ़ की चपेट में वह स्वयं को बचाने में असहाय हो अपने भाग्य को कोसने लगता है इसमके अतिरिक्त उसे कभी टिड्डी दल के आक्रमण तो कभी आधी और तूफान क प्रहार भी ने पड़ने हैं। कभी-कभी तो उसे चूहों और विषैले पशु-पक्षियों से प्रताड़ित होना पड़ता है।

दिन-रात कठोर परिश्रम करने पर भी उसके पास टूटी-फूटी, घास-फूस की ही झोपड़ी होती है। उसके बच्चे भूख से कभी-कभी इतना बिलबिलाने लगते हैं और वे बहुत ही दयनीय अवस्था में दिखाई पड़ते हैं। उनका जन्म भी तो घोर अभाव, बेबसी, ऋण जाल में फंसा लिपटा होता है।

उनके इस प्रकार के जीवन को देखकर ही किसी ने

ठीक ही कहा है:

हैं घर फूस की झोपड़ियाँ, इनमें जीवन पलता है।

दिन-रात परिश्रम में पिसता, टुकड़ों में मानव पलता है।।

आपदाओं के साथ-साथ भारतीय किसान को कृत्रिम अर्थात् सामाजिक आपदाएँ भी झेलनी पड़ती हैं। इस सन्दर्भ में यह कहना बहुत ही चिन्ताजनक है कि आजादी के सत्तर वर्षों बाद भी भारतीयकिसान के जीवन में कोई अपेक्षित परिवर्तन नहीं आया है।

जहाँ एक - ओर वह हर प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त होकर निरुपाय हो उठता है, वहीं वह दूसरी ओर सामाजिक कुप्रभावों से बच नहीं पाता है। उसके जीवन में अशिक्षा, अभाव, संघर्ष, उपेक्षा, मुकदमेबाजी, शोषण, धोखा, दवाब आदि सामाजिक प्रकोप आकर उसे नरक की जिन्दगी जीने के लिए विवश कर डालते हैं।

ये उसके किंचित सुख और चैन को हराम कर देने में हमेशा लगे रहते हैं। एक से मुक्ति मिलते ही वह दूसरे के चंगुल में फंस जाता है। इस तरह वह अपनी पूरी जिन्दगी में कभी भी चैन की वंशी नहीं बाजा पाता है।

भारतीय किसान हमारी भारतीयता की सच्ची मूर्ति हैं। वह देश की रीढ़ हैं। वह हमारी अर्थव्यवस्था का प्राण है। इसलिए उमके जीवन दशा को अभी और ऊपर उठाना होगा। इसके लिए उसे सेठ-साहूकारों के चंगुल से मुक्त करना होगा।

इस कार्य के लिए हमें उसके उत्पादों को सही मूल्य दिलाना होगा। सुलभ ऋण दिला करके उसे उन्नतशील खाद, बीज की व्यवस्था करनी होगी। इस तरह उसे पूरा आत्मनिर्भर बनाना होगा।





आत्मपरिचय



अभिनय चव्हाण
FE E&TC

आत्मपरिचय - कविवर बच्चन जी इस कवितांश में अपने और संसार के मध्य के रिश्तों की विवेचना करते हुए कहते हैं कि यह संसार जिसमें मैं आया हुआ हूँ, उसका जीवन जीने का और जीवन के साथ व्यवहार करने का अपना एक पारंपरिक ढंग है।

कविता 'आत्मपरिचय' में कवि अपना परिचय देता है। कविवर बच्चन जी इस कवितांश में अपने और संसार के मध्य के रिश्तों की विवेचना करते हुए कहते हैं कि यह संसार जिसमें मैं आया हुआ हूँ, उसका जीवन जीने का और जीवन के साथ व्यवहार करने का अपना एक पारंपरिक ढंग है। कवि अपना आत्मपरिचय देते हुए कहते हैं कि मैं इसी प्राप्त प्रेम की शराब को पिया करता हूँ। इसका नशा मुझे अलौकिक आनंद से सराबोर कर देता है। इसमें डूबे रहने के कारण मैं दुनिया के बारे में सोचता तक नहीं। इसी कारण से दुनिया ने मुझे उपेक्षित कर रखा है।

कवि के हृदय में उनके अपने मौलिक विचार हैं। वे उन्हें व्यक्त करने के लिये व्याकुल रहते हैं। उनके पास संसार को देने के लिये अनोखे और अनुपम उपहार हैं, वे उन्हें संसार को भेंट कर देने के लिये उत्साह से भरे हुए हैं। उनके सामने जैसा संसार है, उसमें उन्हें अधूरापन दिखायी देता है। इसी अधूरेपन के कारण यह दुनिया उन्हें अच्छी नहीं लगती। उनके जीवन में अन्य लोगों की तरह ही सुख और दुख दोनों ही हैं, पर कवि सुख में अहंकारी नहीं होते और दुख में विचलित नहीं हो जाते। दोनों में ही एक प्रकार की मस्ती का अनुभव करते हैं।

कवि कहते हैं कि वे अपने अंदर युवावस्था की जो विशेष उमंग होती है, उसे सदैव ही साथ लिये रहते हैं। पर उमंग में भी प्रेम की उदासियां हैं। इसके कारण वे दुनिया को दिखाने के लिये खुया रहा करते हैं, परंतु अंदर ही अंदर रोया करते हैं। इसका कारण है कि

उनके हृदय में किसी प्रियजन की स्मृतियां बसी हुई हैं।

कवि कहते हैं कि मैं अलग किस्म का आदमी हूँ जबकि यह दुनिया मुझसे भिन्न प्रकार की है। इसलिये इसके साथ मेरा कोई नाता संभव ही नहीं है। कवि कहते हैं कि मैं जब रुदन करता हूँ, तब उसमें मैं प्रेम की अविरल धारा रहा करती है। मेरी वाणी भले ही पीतल हो, किंतु वह उन शब्दों का उच्चारण करती है, जिनमें आग होती है। संसार की विसंगतियों को जला डालने की उसमें क्षमता है। यद्यपि मेरा हृदय एक ध्वस्त इमारत की तरह है, फिर भी वह ऐसे प्रेम की इमारत है, जिस पर सम्राटों के आलीशान महल भी लुटाये जा सकें।

आत्मपरिचय कविता

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्या र लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं सासों के दो तार लिए फिरता हूँ!

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा है उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ!

मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;
है यह अपूर्ण संसार ने मुझको भाता
मैं स्वपन्नों का संसार लिए फिरता हूँ!

Continue on Page No. 36



6 feet





प्रेरणा: सही या गलत ?



प्रतिक हणमगांव
FE E&TC

प्रेरणा : सही या गलत - इस लेख में ज़िन्दगी जीने और अपने सारे काम करने के लिए प्रेरणा दी गयी है ।

लोग बहुत बार कहते हैं, की मेरे पास वॉ प्रेरणा नहीं है जो किसी काम को करने के लिए जरूरी हो, या मेरे पास वॉ दीमागी हालत नहीं है, जिसके आधार पर मैं अच्छा काम कर सकु । लेकिन मुझे लगता है की ज़िंदगी जीने के लिए कोई या किसी से प्रेरित होने की कोई जरूरत नहीं ।

आप किसी को देखकर या सुनकर प्रेरित नहीं वो सकते । कही बार लोग कहते हैं, की मैं इनको या उनको देखकर या सुनकर प्रेरित हुआ हुं, भाई वो प्रेरणा नहीं है आकर्षण है उस चीज का । क्योंकि, आप जब किसीको देखते हैं तो आप खुद को उसकी जगह महसूस करने लगते हो, आप खुद उस इन्सान की तरह बनना चाहते हो तों आप उसे प्रेरणा नहीं कह सकते । उस बात का या उस स्थिती का वो आकर्षण होता है ।

मुझे नहीं लगता की इन्सान को ज़िंदगी जीने के लिए या अपनी परेशानी दूर करने के लिए किसी से या कोई चीज से प्रेरित होना आवश्यक है । इन्सान अपनी जरूरतों के हिसाब से कोई भी काम करता है । उदाहरण के लिए - यदि किसी को पढाई करना उसकी जरूरत लगेगी, तों वॉ पढाई करेगा (किसी भी किमत पर), किसी को ज़िंदगी में भागना उसकी जरूरत लगेगी तों वॉ इन्सान भागेगा (किसी भी किमत पर), तो यहा पढाई या भागने नें के लिए कोई प्रेरित होने की जरूरत नहीं , यदि उसकी वो जरूरत होगी तो किसी भी किमत पर वो करेगा ।

हमारे पास जो है, उसे छोडकर हम हमारे पास जों नहीं है उसके पीछे हम लगे हुए हैं । आप जब भी खुद कों अपनी ज़िंदगी में बहुत पीछे महसूस कर रह है तो समज लजिए की यही समय है, आपको अपनी ज़िंदगी में भागने का प्रयास करना है । अब बहुत लोग ऐसा भी कहेंगे, की प्रयास करने के लिए तो प्रेरित होने कि जरूरत है । मैंने शुरुवात में ही कहा , इन्सान अपनी जरूरतों के हिसाब से काम करता है, यदि 'प्रयास करना' आपकी जरूरत होगी तो अपने आप किसी भी किमत पर आपको जों चाहीए उसे पाने के लिये आप प्रयास करने लगेंगे, तो इसके लिए आपको अलग से कोई प्रेरित होने की कोई जरूरत नहीं ।

किसी कों सुनकर या किसी को देखकर आप कोई काम करते भी है, तो समज लजिए यह काम आप आपके लिए नहीं अपनी खुद की मजबुरी के कारण कर रह है, इसलिए खुद को समजो । मैं बार-बार यही बताना चाहता हुं अपनी जरूरतों को समज लजिए । ज़िंदगी आपकी है और आप खुद ही उसे अच्छे तरिके से जीने के लिए मदद कर सकते है ।

आप को लगेगा, मैं भी आपको प्रेरित करने का प्रयास कर रहा हुं । माफ किजिए, मेरा ऐसा कोई मतलब नहीं है । मैं आपको अपनी ज़िंदगी खुद के हाथों में रखने का अनुरोध कर रहा हुं ।

**IT'S YOUR LIFE,
MAKE IT LARGE**



जिन्दगी क्या है?



गुरुप्रसाद पाटिल
TE Civil

जिन्दगी क्या है?
इस लेख में जिन्दगी के हर एक पल खुशी से
जीने की बात बताई गयी है।

निश्चित समय के लिए मिला जीवन, जो पता नहीं कब खत्म हो जाए, या कह सकते हैं कि जिन्दगी पानी के एक बुलबुले के समान है जो कभी भी खत्म हो सकती है। तो क्यों न इस अनमोल जीवन का एक-एक पल जीया जाए। यह नहीं सोचना चाहिए कि जीवन में कितने पल हैं, अपितु यह सोच कर चलना चाहिए कि एक पल में कितना जीवन है। जो पल बीत गए, वे चले गए, फिर हाथ नहीं आने वाले।

अब जरा सोचें जो पल बीत चुके वे हमने मजबूरी में काटे या उन्हें जीया। कही ऐसा तो नहीं कि उन्हें याद करके ही घबरा जाएं। यदि ऐसा है तो हम अपने जीवन को जीवन नहीं कह सकते।

**कर दिए बरबाद यूं वरक-ए-किताब-ए-जिन्दगी,
कुछ हमी नें फाड़ डाले, कुछ हवा में उड़ गए**

इस तरह अपनी जिन्दगी को बरबाद न करें। यह अनमोल है इसे जितना भी हो सके खुशियों से भर दें। चारों ओर खुशियाँ ही खुशियाँ हो और मुस्कुराहटें हों। इसीको जीना कहते हैं, तभी जिन्दगी सार्थक हो सकती है। अगर जिन्दगी में खुशी है तभी आप सही मायनों में जी रहे हो और खुशी तो आप छोटी से छोटी बात में भी ढूँढ सकते हो। अब यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम इसे कितना और कैसे प्राप्त करते हैं। याद रहे, दूसरों को खुशी देने से ही हमें सच्ची खुशी मिल सकती है।

प्रयास करें कि हम अपने परिवार वालों और अपने

परिजनों व परिचित लोगों को जिन-जिन के सम्पर्क में हम आते हैं सभी को दिल से चाहें, किसी से भी नफरत न करें। इस से दूसरों को तो तकलीफ पहुँचती ही है उस के पहले हमारा मन भी दुःखी होता है और दिलों में दूरियाँ बढ़ती हैं। जिस से भी मिले मुस्कुरा कर मिलें। क्या पता फिर मिलें कि न मिलें। हो सकता है यह हमारी आखिरी मुलाकात हो। इस आखिरी मुलाकात की याद कैसी हो, कड़वाहट भरी या प्यार भरी? यह सब हम स्वयं ही सोच सकते हैं।

क्या आपने कभी सोचा है कि हमारे मित्र, हमारे सगे-सम्बन्धी सिर्फ एक बार के लिए मिले हैं। इस संसार से जाने के बाद कोई किसी से दोबारा मिलने वाला नहीं, बिछुड़ जाएंगे सदा-सदा के लिए कभी दोबारा न मिलने के लिए। फिर चाहे हम लाख कोशिश कर लें, एक पल के लिए भी उन्हें नहीं मिल सकते। रह जाती है तो सिर्फ यादें और पछतावा, सदा-सदा के लिए।

**“वो मेरे बाद रोने है? कोई उनसे पूछे
कि पहले किस लिए नाराज थे
अब महरबान क्यों हैं?”**

भाव यह कि पहले तो हमें किसी इन्सान में कोई अच्छाई नजर नहीं आती और उसके मरजाने के बाद कोई कमी नजर नहीं आती। उस के दोष भी गुणों में तब्दील हो जाते हैं और वह कमी महसूस होती है जो फिर कभी पूरी नहीं हो सकती। तो क्यों न हम समय रहते ही संभल जाएं और अपने जीवन का पूरा आनन्द लें।

Continue on Page No. 37





DEAR ज़िंदगी



रितिका नोरा

TE CSE

Dear ज़िंदगी - एक छोटी-सी कहानी है जो 'ज़िंदगी क्या है ?' इस सवाल का जवाब बताती है।

'ज़िंदगी' हर कोई अपनी तरीके से जीना चाहता है। हर किसी की 'ज़िंदगी' को लेकर अपनी अलग-सी चाहत है, अपने अलग विचार है। कोई ज़िंदगी खुद के लिए जीना चाहता है तो कोई औरोंके लिए जीना चाहता है। पर 'ज़िंदगी' क्या है ? ये सवाल हर किसी को सताता है। तो चलिए आज हम इस सवाल का जवाब ढूंढते है। इस सवाल का जवाब भी हर किसी के लिए अलग है। कभी ज़िंदगी एक रंगमंच है, तो कभी वो एक संघर्ष है, कभी ज़िंदगी एक खेल है, तो कभी ज़िंदगी उत्सव है, तो कभी ज़िंदगी एक सुन्दर सफर है।

**सच कहो तो- बनते बिगड़ते हालातों का हिसाब है ज़िंदगी,
हर रोज़ एक नया पन्ना, जुड़ता है जिसमे वो एक किताब है ज़िंदगी।**

कुछ पा लेने की ज़िद हर किसी के दिल मे है, चाहे वो सही हो या गलत ! लेकिन सही फैसले लेकर ज़िंदगी को **डिअर ज़िंदगी** बनाकर जीने में ही जीवन की सफलता छुपी है।

एक छोटी - सी कहानी है जो 'ज़िंदगी क्या है ?' इस सवाल का जवाब बताती है- वो कहानी है एक माँ और उसके बेटे की। एक दिन माँ उसके बेटे को लेकर पहाड़ों पे घूमने जाती है, वहाँ वो छोटा-सा बच्चा पहाड़ों पे जा कर जोर से चिल्लाता है और चीख जब पलट कर उसे सुनाई देती है तो वो डरकर वापस भागता है और अपनी माँ को ये बताता है की, माँ जो मैं बोलता हूँ वही बात उधर से

कोई दूसरा भी बोलता है। यह बात सुनकर माँ को सारी बात समझ मे आ गयी। तब माँ ने कहाँ अब जा कर जोर से बोलो, 'मैं तुम से प्यार करता हूँ!' बच्चे ने ऐसे ही किया और फिर उसे उधर से भी वही आवाज़ सुनाई दी, 'मैं तुमसे प्यार करता हूँ! बच्चा बहुत खुश हुआ और माँ के पास आया और बताया कि, वो भी मुझसे प्यार करता है। तब माँ बच्चे को बताती है- 'हमारी ज़िंदगी भी इस गूँज की तरह है, हमें वही मिलता है जो हम अपनी ज़िंदगी को देते है।' हमारे किये गए कर्मों के आधार पर ज़िंदगी अपना परिणाम देती है। अच्छे काम का अच्छा परिणाम और बुरे काम का बुरा परिणाम ।

हम अक्सर बिगड़े हालत, रोज़ की भाग दौड़ भरे दिन की थकान, अपनी खुशियों को पाने के लिए बेतहाशा भागते हुए ये सारी टेंशन अपनों पे या अपने-आप पे निकलते है। ये सारी चीज़े अपने व्यवहार मे आ जाती है। पर हम ये भूल जाते है की जिस खुशियों को हम भविष्य मे पाना चाहते है उसे ढूंढते हुए हम वर्तमान की सारी खुशियाँ खो रहे है। ज़िंदगी एक समुद्र सी है, जिसमे ढेर सारी खुशियों की या गम की लहरें अक्सर आती है। लेहरो की तरह खुशियाँ भी लौटकर नहीं आती है। ज़िंदगी एक उतर-चढ़ाव भरी सड़क की तरह है, जहाँ कभी हम डरते-डरते फैसले लेते है और कभी तेज चाल से चलते हुए अपनी मंजिल को पा लेते है। पर उस राह पर हमे सबसे प्यार से पेश आना चाहिए, तभी तो ज़िंदगी भी हमे अपना प्यार देगी।।

Continue on Page No. 37





शिवानी दरेकर
BE CSE

कुछ बातें.....

कुछ बातें - यह पेड़ों के बीच का सम्भाषण है जो बहुत सालोंसे मानवों के वजह से परेशान है और कोरोना के आने के वजह से बहुत खुश है ।

(कहीं दूर जंगल में पेड़ खुशी से नाच रहे थे, गर्जन कर रहे थे और कुछ संचार कर रहे थे। आइए देखें कि वे किस बारे में बात कर रहे हैं)

पहला पेड़: उफ़ कितनी खुशी है, आज इस जंगल में कितनी शांति है। मुझे आज बहुत ही अच्छा महसूस हो रहा है। ऐसा लग रहा है की मन की तरंगों के साथ उंची उडान भरूं।

दूसरा पेड़: अरे, आज तुम्हें क्या हो गया ? इतने खुश क्यों हो ?

पहला पेड़: आज इतने सालों के बाद, इस जंगल में कोई मानवीय स्पर्श नहीं है, उसकी कोई आवाज नहीं है, कोई क्रूर हँसी नहीं है। आज, यह जंगल हमारा हैं नाहीं की उस मानव का।

दूसरा पेड़: यह सही है। यह कोरोना हमें बहुत सुकून दे रहा है। नहीं तो, यह मानव इस जंगल में आते थे, हमें प्रताड़ित करते थे, जानवरों को परेशान करते थे, उन्हें मारते थे, हमारे भाइयों (दूसरे पेड़) को काटते थे। लेकिन अब ऐसी कोई बात नहीं है।

पहला पेड़:(खुशी से)हैं ना... हर जगह देखो, हर कोई कितना खुश है। वे बिना किसी डर के हर जगह चल रहे हैं।

एक और पेड़: लेकिन यह आदमी इतना क्रूर कैसे हो गया ? यह पहले ऐसा नहीं था। वह जंगल में रहने पर कितना खुश रहता था। ऐसा लगत था कि वह हमारा दोस्त है। वह हमारे साथ खेलता था। बड़े प्रेम से हमारी फूलों और फलों का आनंद लेता था। जंगल कितना साफ था।

पहला पेड़: लेकिन अब यह अधिक महत्वाकांक्षी हो गया है। उसे अपनी कृतज्ञता का ज्ञान नहीं रहा। वह स्वार्थी हो गया है। उसे पेड़ों

को काटने, जानवरों को मारने और उनकी खाल बेचने में मजा आता है।

(जब यह पेड़ों का संवाद चल रहा था, एक बंदर और एक हाथी वही से गुजर रहे थे। वह इस संवाद को सुनते है और कहते है ...)

बंदर: तब इंसान इंसानियत से बंधा हुआ था। लेकिन अब वही आदमी इस इंसानियत को भूल गया है। उसे पर्यावरण की जानकारी नहीं रही। उन्होंने महसूस किया कि पर्यावरण उनकी इच्छा के अनुसार उपभोग और उपयोग की वस्तु हैं। लेकिन यह प्रकृति थी जिसने उसे एक अच्छा सबक सिखाया। अब उसके पास घर पर रहने के अलावा कोई चारा नहीं है। यही कारण है कि हम आज इस आनंद का आनंद ले रहे हैं।

हाथी: लेकिन सभी लोग एक जैसे नहीं होते हैं। कुछ लोगों में अभी भी एक मानवीयसंतुलन है। अभी भी कुछ लोगों में ईन्सानियत हैं। यह वह आदमी है जो आज जरूरतमंद लोगों की मदद कर रहा है। वे एक-दूसरे का समर्थन कर रहे हैं वो भी घर बैठ कर।

बंदर: यह आप कह रहे हैं ? क्या आप भूल गए हैं कि उसने आपकी बहन के साथ कैसा व्यवहार किया ? वो इन चांडालोंद्वारा अपने बच्चे के साथ मारी गयी है। क्या गलती थी उसकी ? वह केवल भूखी थी,यही ना। अगर आदमी लोगों की मदद करता है, तो वह हमारे जैसे निर्दोष जानवरों के साथ ही ऐसा व्यवहार क्यों करता है ?

पहला पेड़: (बंदर का साथ देते हुए) आप सही कह रहे हैं। ये लोग लोगों में भेदभाव करते हैं। धर्म, जाति, मानदंड, परंपराओं के आधार पर गरीबों को सताना और आप कहते हैं कि यह एक दूसरे की मदद कर रहा है ? तुम क्या कह रहे हो यह ?

Continue on Page No.38





क्या हम अपना जीवन समझदारी से जी रहे हैं?



श्रीनिवास बंदगुल
TE CSE

क्या हम अपना जीवन समझदारी से जी रहे हैं? - इस लेख में जीवन समझदारी से जीने का तरीका बताया है।

हाल ही में मैंने स्वर्गीय डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम सर की लिखी एक पुस्तक पढ़ी। एक स्कूल की यात्रा के दौरान, वह बच्चों से सवाल पूछ रहे थे और एक छात्र ने उनसे पूछा, जीवन में हमारे आदर्श कौन होने चाहिए?? उन्होंने कुछ समय तक प्रतीक्षा की, अपने स्वयं के बचपन पर एक दृष्टि डाली और कहा, '१५ साल की उम्र तक शिक्षक और माता-पिता हमारे सबसे अच्छे रोल मॉडल हो सकते हैं, और जैसा कि कहा जाता है कि माता-पिता के पीछे स्कूल खड़ा होता है, और शिक्षक के पीछे घर।'

जब वे एक बच्चे थे, तो वे अपने पिता को जरूरतमंदों की मदद करते हुए देखते थे, हालांकि उनके पास आय के बहुत सीमित स्रोत थे। उनके शिक्षक शिवसुब्रमण्य अय्यर उनके पिता को आर्थिक तंगीको दूर करने के लिए उन्हें स्कूल भेजने के लिए सहमत करने के लिए जिम्मेदार थे। उन्होंने कहा कि प्रत्येक माता-पिता के लिए बच्चों को अच्छे इंसान, प्रबुद्ध और परिश्रमी बनने के लिए मार्गदर्शन देना बहुत जरूरी है।

मेरे मन में सवाल उठता है कि मेरे जीवन में किसी समय मैं एक माता-पिता या शिक्षक बनने जा रहा हूँ (यदि मैं इसे अपने करियर के रूप में चुनता हूँ) और अगर मैं अपने बच्चे या अपने छात्र के लिए एक रोल मॉडल बनने जा रहा हूँ, तो क्या मैं वास्तव में इसके लायक? हम एक ऐसी पीढ़ी हैं, जो एक ऐसी दुनिया में रह रही है, जहां लगातार नकारात्मक विचारों का बमबारी, सोशल मीडिया के माध्यम से, या फिल्मों के माध्यम से और अन्य रील

लाइफ चीजें हम पर हो रही हैं और बात यह है कि हम इससे अनजान हैं या चाहे कुछ राशि जिन्हें हम जानते हैं, फिर भी हम वास्तव में इससे दूर नहीं जा रहे हैं या इस पर कोई समाधान नहीं खोज रहे हैं। सोशल मीडिया हमें दिन-प्रतिदिन आलसी बनाता जा रहा है जबकि टिकटोक जैसे मंच हमें अधीर कर रहे हैं। क्या यह चिंता की बात नहीं है कि हम में से बहुत से लोग १० मिनट के लिए भी किसी एक चीज पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकते हैं?? (हम १५ मिनट तक चुपचाप अपना भोजन भी नहीं कर सकते) हम उन उत्पादों का उपयोग कर रहे हैं जो एक सेलिब्रिटी कभी भी गलती से भी अपने पूरे जीवन में उपयोग नहीं करेगा। लेकिन सिर्फ इसलिए कि वह हमारा पसंदीदा सितारा है, क्या हमें उन चीजों का उपयोग करना चाहिए जो वह विज्ञापित करता है?? क्या हम अपने स्वयं के दिमाग का उपयोग नहीं कर सकते हैं और यह नहीं तय कर सकते हैं कि किसका उपयोग करना है और किसका नहीं??

हम मनुष्य अन्यजीवित प्रकारों की तुलना में श्रेष्ठ हैं क्योंकि हमारे पास सवाल करने की क्षमता है, क्या हम इस क्षमता को नहीं खो रहे हैं और भीड़ में एक भेड़ की तरह नहीं बन रहे हैं? यदि अभी से कुछ वर्षों तक भी यही स्थिति बनी रही... तो हम एक युवा और एक इंसान के रूप में अपनी क्षमताओं को पूरी तरह से खो देंगे और अगली पीढ़ी को सफल बनाने में असफल रहेंगे... लेकिन जैसे सवाल हैं, समाधान भी वहां मौजूद हैं।

Continue on Page No. 38





सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर: कर्ण



शिवानी दरेकर

BE CSE

सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर: कर्ण - तेजस्वी मुख, कमल नेत्रों और कवच के साथ जन्मे वीर धनुर्धर सूर्य पुत्र की ये कहानी है।

सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर कौन है? जब यह पूछा जाता है तो अधिकतर लोग पांडु पुत्र अर्जुन का नाम लेते हैं। लेकिन हम उस विशाल कर्ण को भूल रहे हैं। तेजस्वी मुख, कमल नेत्रों और कवच के साथ जन्मे सूर्य का यह पुत्र मन से विशाल, उदार और विनम्र था। अगर पूछा जाए कि एक वफादार और प्यार भरी दोस्ती को कैसे बनाए रखा जाए, तो सब से पहले कर्ण के नाम का उल्लेख किया जाएगा।

राजकुमारी कुंती, जिन्हें अपने सबसे बड़े बेटे कर्ण को राजधर्म के कारण छोड़ना पड़ा, वही बच्चा राधा माई का राधेय के नाम से जाना जाने लगा। होशियार, विनम्र और उदार कर्ण बचपन से क्षत्रिय होने के बावजूद सुतपुत्र कहलाया गया। कर्ण बुद्धिमान और बहादुर था। उसने कभी किसी के साथ अन्याय नहीं होने दिया। कर्ण धनुर्विद्या सीखना चाहते थे लेकिन गुरु द्रोणाचार्य ने उन्हें शिष्य मानने से इंकार कर दिया लेकिन कर्ण ने हार नहीं मानी। उन्होंने कड़ी मेहनत और तपस्या के माध्यम से गुरु परशुराम से सभी प्रकार की धनुर्विद्या प्राप्त कर ली।

लेकिन उन्हें उसी गुरु से श्राप मिला। ऐसा हुआ कि एक दिन गुरु परशुराम अपने शिष्य कर्ण की जांघ पर हमेशा की तरह सिर रखकर आराम कर रहे थे। अचानक एक मधुमक्खी वहां आई और कर्ण की जांघ को काटने लगी। पर कर्ण वहीं बैठा रहा और सब कुछ सहन कर लिया ताकि उसका गुरु के विश्राम कोई बाधा न आजाए। उनकी जाँघें खून से लथपथ थीं। जब गुरु परशुराम को गीला महसूस हुआ, तो वे जाग गए और उन्होंने देखा कि कर्ण की जाँघों से खून

बह रहा है। गुरु परशुराम क्षत्रियों से बहुत नाराज थे। कर्ण की स्थिति देखकर गुरु परशुराम को बहुत गुस्सा आया और उन्होंने कहा, कर्ण, तुम ब्राह्मण नहीं हो, तुम एक क्षत्रिय हो। ऐस एकमात्र क्षत्रिय हैं जो इतना धीरज धारण कर सकते हैं। मैं तुम्हे श्राप देता हूँ कि तुमने मुझसे झूठ बोलकर जो विद्या प्राप्त की है वो तुम याद नहीं कर पाओगे जब तुम्हे इसकी सबसे ज्यादा जरूरत होगी। ऐसा कहकर गुरु परशुराम वहांसे चले गये।

अंत में ऐसा ही हुआ, महाभारत युद्ध में, जब कर्ण अर्जुन से लड़ते हुए एक दिव्य हथियार चाहता था, तो वह इसका उपयोग न कर पाया और उसका रथ उसी वक्त कीचड़ में फंस गया। और उसी समय अर्जुन ने उसका वध कर दिया। ब्राह्मण द्वारा एक गाय का वध करने के लिए कर्ण को श्राप मिला था कि उसका रथ तभी कीचड़ में फंस जाएगा जब वह अपने जीवन की सबसे महत्वपूर्ण लड़ाई लड़ रहा होगा। और ये सभी श्राप एक ही बार में सच हो गए। यदि यह अभिशाप नहीं होते, तो महाभारत के युद्ध में अर्जुन की हार निश्चित थी।

कर्ण और दुर्योधन के बीच की दोस्ती सराहनीय है। दुर्योधन ने एक उपहार के रूपमें कर्ण को अंगदेश दिया और कर्ण अंगदेश का राजा कहा जाने लगा। कर्ण अपनी अंतिम सांस तक दुर्योधन के साथ रहे और दुनियाको दिखा दिया कि दोस्ती जैसा अविभाज्य और निस्वार्थ रिश्ता कोई नहीं है। कर्ण सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बनना चाहता था। और हां दानवीर, शूरवीर कर्ण सबसे अच्छा तीरंदाज है। उन्होंने महाभारत में बिना किसी दिव्यास्त्र का इस्तेमाल



6 feet



किए बडापराक्रम किया।

कर्ण एक शूरवीर तो था ही लेकिन वह एक दानवीर भी था। अगर कोई उससे दान मांगता, तो वह कभी ना नहीं कहता। अपनी बात रखने और ज़रूरतमंद लोगों की मदद करने के लिए उन्होंने अपने जीवन की भी चिंता नहीं की। महाभारत के युद्ध में अर्जुन को बचानेके लिए, देवराज इंद्र ने कर्ण से उसकी अभेद्य कवच और कुंडल भिक्षा में मांगी। औरइस दानवीर कर्ण ने अपने शरीर के एक अभिन्न अंग को काटकर देवराज को दे दिया। अपनेशरीर से उस अभेद्य कवच को हटाते समय उसे कितना दर्द और कीतनी पीड़ा हुईहोगी।

कर्ण का पूरा जीवन दुख और लोगों की जलीकटी बातें सुनने में बीता। लेकिन उन्होंनेउसे कभी अपने लक्ष्य पर नहीं चढ़ने दिया। उन्होंने अपना पूरा जीवन भक्ति, प्रेमऔर दूसरों की मदद के लिए हमेशा तैयार रहने में बिताया। ऐसे महान,दानवीर कर्ण फिरसे जन्म लेना असभव।



जिन्दगी क्या है?

इसे दु :खों की भट्टी में नज़ोंके। इस दुनियाँ के जंजाल में इतनामत पँस जाओ कि जीना ही भूल जाओ और केवल जीने की रस्म ही अदा करते रही । खुद कोखुशी से दूर न रखें । हर एक खुशी का अहसास करें । मन को बाँ ध कर न रखें उसेउड़ने दें । हमें जीवन में आगे बढ़ना चाहिए क्योंकि ठहराव जीवन नहीं है ।

जीवन तो इतना अनमोल है कि किसी भी कीमत पर दोबारा नहीं मिल सकता, फिर इसकाइतना अपमान क्यों? अब प्रश्न यह है कि हम सुखी कैसे रहें? कैसे अपनी जिन्दगी सेदुःख-दर्द मिटाएँ? इसके लिए हमें कुछ बातों का ध्यान रखना होगा, जो वैसे तो बहुतसरल और साधारण सी बातें है लेकिन यदि गहराई से सोचें तो ये जिन्दगी बदल कर रखसकती है।



कोरोना के योद्धा

ये डॉक्टर, पुलिस , सफाई कर्मचारी इस संघर्ष में भी वेअपने आप की मदत के लिए अपने आपको ही ताकतवन और निस्वार्थी होकर हमारी रक्षा कर रहे है। इस कोरोना वायरस ने पुरे दुनिया के सभी मेडिकल कर्मचारी और डॉक्टरों को चुनोती दी है, और उस चुनोती को अपनाकर सभी देशो के डॉक्टर कड़ी मेहनत कर रहे है। इन सभी के मेहनत पर उनके देश की सरकार और सभी नागरियों का विश्वास बना है। सभी लोग उनके सफल होने का इंतजार में है।

जैसे की डॉक्टरों पर इलाज की बड़ी जिम्मेदारी है, वैसी ही जिम्मेदारी पुलिस कर्मचारी पर भी है। कड़ी धुप में सब की रक्षा के लिए रास्ते पर दिन भर चौकन्ने होते है। खुदकी जान की पर्वाये किये बैगर हमारे लिए २४ सौ घंटे तैद रहते है। उनके खुद के परीवार की पर्वाह किये बैगैर हमारे परिवार के लिए हमेशा पुलिस आगे रही है। पुलिस कर्मचारीयों पर ज्यादा दबाव न आये और उन्हें समय समय पर आराम मिलें इस लिए हमारे युवक उनकी मदत करने सामने आ रहे है, ये बहुत ही गर्व की बात है। इस भयानक कोरोना वायरस को रोकने के लिए सबसे अच्छा उपाय ये है की, हमारे आसपास , रस्ते पर और हर जगह सफाई बनें रहे। इस के लिए सफाई कर्मचारी ये काम बड़ी अच्छी तरह कर रहे है। हमें उनको भी उतना ही साथ देना है। घर के किये गए सफाई का अच्छी तरह से सफाई कर्मचारीयोको सौफा है। कचरा इधर उधर बिलकुल भी नही फेकना है। ये सभी हेरोस हमारे लिए इतना मेहनत कर रहे है तो हमारा भी यह कर्तव्य है की हम उनका पूरी तरह से साथ दे।

इन सभी योद्धाओं के जैसे बहुत से ऐसे बहुत से लोग है जो इस संकट को मिटाने के लिये बहुत मन्नत कर रहे है। उन सभी पर हमको बहोत गर्व है। सभी डॉक्टर , पुलिस , सफाई कर्मचारी और अन्य सभी योधावों पर हम सभी को बहोत है। इन सभी को तहे दिल से सलाम और धन्यवाद।



आत्मपरिचय

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव मौजों पर मस्ते बहा करता हूँ!

मैं यौवन का उन्माजद लिए फिरता हूँ,
उन्मौदों में अवसाद लए फिरता हूँ,
जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,
मैं, हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ!

कर यत्नो मिटे सब, सत्यय किसी ने जाना ?
नादन वहीं है, हाय, जहाँ पर दाना !
फिर मूढ़ न क्याट जग, जो इस पर भी सीखे ?
मैं सीख रहा हूँ, सीखा ज्ञान भूलना !

मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज़ मिटाता ;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता !

मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिसपर भूषों के प्रसाद निछावर,
मैं उस खंडर का भाग लिए फिरता हूँ!

मैं रोया, इसको तुम कहते हो गाना,
मैं फूट पड़ा, तुम कहते, छंद बनाना ;
क्यों कवि कहकर संसार मुझे अपनाए,
मैं दुनिया का हूँ एक नया दीवाना !

मैं दीवानों का एक वेश लिए फिरता हूँ,
मैं मादकता निःशेष लिए फिरता हूँ;
जिसको सुनकर जग झूम, झुके, लहराए,
मैं मस्तीक का संदेश लिए फिरता हूँ!

- हरिवंशराय बच्चन



DEAR ज़िंदगी

ज़िंदगी एक ऐसा पहलू है जहाँ घटनाये कहानियों की तरह घटती है और हमे उनसे सीख मिलती है। यह हमारे ऊपर है की हम किस घटना से क्याक सीखते है। ऋश्वशप थीवी ये है की, 'अच्छा सोचोगे, तो हमारा आने वाला कल ज़रूर अच्छा ही होगा।' बेहतर ज़िंदगी की यही सच्चाई है।

ज़िंदगी को बेहतरीन बनाने का एक तरीका आपस मे मिलना-जुलना भी है क्योंकि एक दूसरे से मिलकर हम कुछ अच्छा सिख सकते है, एक दूसरे का साहस बढ़ाकर उनका तनाव खत्म कर सकते है। यह हमारे ज़िंदगी को डिअर ज़िंदगी कहने का एक और तरीका है।

ज़िंदगी, एक उलझी-सी पहेली है,
दर्द और गम तो जैसे तेरी एक सहेली है,
जिसने समझ लिया तुझे उसके लिए
खुशियों-सा महका बाग है तू, और
उलझ के रह गया तुझमे उसके लिए
सिमटा हुआ एक कब्रस्तान है तू।

इसलिए, हमे कोई भी काम करने से पहले ज़रूर सोचना चाहिए की हम क्या कर रहे है और इसका परिणाम क्या होगा। राग, द्वेष, घमंड, वाद-विवाद इत्यादि अवगणों को अपने व्यवहार मे नहीं लाना चाहिए। हमेशा हमे अपने-आप को और दुसरो को निराशा और तनाव से दूर रखकर ज़िंदगी की तरफ एक सकारात्मक दृष्टिकोण से देखना चाहिए। तभी हम ज़िंदगी को समझ सकते है, उसके खशियों की मेहक को महसूस कर सकते है और उसे गले से लगाकर कह सकते है - **Dear Zindagi, I love you..**



क्या हम अपना जीवन समझदारी से जी रहे हैं?

किताबें, पॉडकास्ट, सोशल मीडिया से पोस्ट करने योग्य सामग्री और सबसे बढ़कर, चीजों को बदलने की हमारी इच्छा। जो कोई १५ वर्ष से अधिक उम्र का है, उसका अपना रोल मॉडल (शिक्षक औरमाता-पिता के अलावा) होना चाहिए। हमें उनके साथ अपना समय बिताना चाहिए और उनसे मार्गदर्शन लेना चाहिए। भले ही वे अब इस दुनिया में मौजूद नहीं हैं, फिर भी हम उनकी किताबों, भाषणों, उनकी आत्मकथाओं आदि के माध्यम से ऐसा कर सकते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि हम किसके साथ अपना समय बिताते हैं, हम अपने मन को क्या खिलाते हैं और हमारा मित्र मंडल कैसा है। मैं अपने स्कूल के दिनों से ही बहुत सारी किताबें पढ़ता था, और मुझे विश्वास है कि मैंने आज तक जो किताबें पढ़ी हैं, उन्होंने मुझे बहुत सकारात्मक बनाया है और मुझे कुछ हद तक ज्ञान दिया है। दुनिया को बदलने के लिए सबसे पहले खुद को बदलना महत्वपूर्ण है। हमारी आत्मा को खुश करनेके लिए, हमारा शारीरिक, मानसिक और मनोवैज्ञानिक विकास करना महत्वपूर्ण है। मैंने आज तक जो भी किताबें पढ़ी हैं और उसमें से जो ज्ञान प्राप्त किया है, मैंने उसे अपने यूट्यूब चैनल नॉलेज की मधुशाला पर एक कंटेंट के रूप में डालना शुरू कर दिया है। हम (मैं और मेरी टीम) सबसे बेहतर कंटेंट डालने के लिए जितनी मेहनत कर सकते हैं, करते हैं और वह भी इस तरह से कि जितना संभव हो उतना अच्छा हो और सुनने वाले इसे सबसे ज्यादा पसंद करेंगे। दोस्तों इसकी जिम्मेदारी हमारी है कि हम एक दूसरे की मदद करें। हम भारत की आने वाली पीढ़ी हैं, बल्कि मैं कहूंगा कि हम अगले भारत हैं। आपको अपने आप को इस तरह से बनाना होगा कि जब आप मर रहे हों तो आपको पछतावा नहीं होना चाहिए कि आपने अपना जीवन कैसे जिया है।



कुछ बातें.....

(हर कोई पेड़ के इस कथन का समर्थन करता है।)

हाथी: ओह, इन लोगों की वजह से ही तो हमें भोजन मिलता है। आज हमारे कितने भाईबहन भुख के कारण मर रहे हैं। क्या आपने नहीं सुना कि कई जानवर सड़क पर आ गए क्योंकि उनको भोजन नहीं मिला। ऐसे कई लोग हैं जो जानवरों से प्यार करते हैं। उन्हें खिलाते हैं। उनके साथ प्यार से पेश आता है।

दूसरा पेड़: (हाथी का समर्थन करते हुए) हां, यह बात तो सही है। मनुष्य में अभी भी एक मानवीय संतुलन है। इस तालाबंदी से लोगों में बदलाव आ रहा है।

बंदर: लेकिन ये बदलाव आखिर कब तक रहेगा? वहां अमेरिका में कहा जाता है कि गोरे काले लोगों के साथ अन्याय कर रहे हैं। क्या यही इन्सानियत है?

हाथी: सब कुछ एक ही बार में नहीं होता। हर चीज के लिए समय देना पड़ता है। जैसे इंसान अब खुद के बजाय अन्य जानवरों के बारे में सोच रहा है, वैसे ही वह सोच समझकर सही निर्णय लेना सीख जाएगा। धीरे-धीरे उसे महसूस होगा कि प्रकृति उसका उपहार है। उसे नियमित रूप से इसका उपयोग करना चाहिए और उसकी देखभाल करनी चाहिए। उसे पता चल जाएगा कि यह धरती उसकी मां है। और जब उसे पता चलेगा, तो वह उसका और हमारा श्रवण कुमार की तरह ख्याल रखेगा। उन्होंने इस लॉकडाउन में बहुत कुछ सीखा है। अब वह निश्चित रूप से वही गलती नहीं करेगा जो उसने पहले की थी।

एक पेड़: हाँ, ऐसा ही हो। यही उम्मीद अब इन्सान से।

(हर कोई अपने काम के लिए निकलता है। लेकिन लोगों को इस बातचीत से बहुत कुछ सीखना है। इस समय उनका विश्वास मत तोड़ना।)



स्वप्नप्रधुन



फसाना

बारिशों ने दोस्ती कि ली तुफानो से
मौसम सुहाना हो गया,

इस बिमारी से, हर रोज खिलखिलाता शहर
आज अपनो से ही बेगाना हो गया;

बचपना कर रहा ये सारा जमाना
न जाने क्यू आज सयाना हो गया,

कहते थे निकलेंगे मंजीलो की खोज मे
वो मुसाफिर भी आज एक अनसुना फसाना बन गया।

अभिनय चव्हाण
FE E&TC

पीड़ित की आपदा

अपहरण जब हुआ मेरा,
लंकादहन का कारण बनी।

वस्त्र हरण जब किया गया,
महाविद्रुंश की शुरुआत हुई।

वीरों ने जब अमर गति प्राप्त की,
जोहर को में समर्पित हुई।

बाल अवस्था में जब विधवा बनी,
सती में उनके साथ जली।

कर्तव्य की जब बारी आई,
सबसे आगे में खड़ी रही।

फिर क्यों यह काले बादल छाए,
जिसके बरसात में मेरा मान भीगा?

न्याय जब मांगा मैंने,
लोगों ने मुंह मोड़ लिया।

मेरे अपमानो को झूठलाया गाय,
सारी उम्मीदें है टूट गई।

घोर पापी आज भी है,
आजाद बाहर घूम रहे।

खेद इस बात का नहीं, कि सजा नहीं सुनाई गई,
पर दुख इस बात का है, कि लोग चुप रहे।

गुणजा लिगडे
FE CSE





स्वप्नप्रधुन



मुसाफिर

अब तो हर कोई तेरी याद दिलाने में लगा हुआ है,
मुसाफिर अपनी मंजिल की तरफ निकला हुआ है।

लाख कोशिश करलो अब मुझे समझाने की,
लेकिन मेरी सोच के साथ मेरा झगडा हुआ है।

तोड़ने की कोशिश बेकार है पहले ही बिखरे हुए हैं,
चाहे तो समेट लो अभी भी मुझमें जमीर बचा हुआ है।

कहते हैं सब मिलता है बाजार में सही कीमत पर,
लेकिन इंसान के अंदर अभी भी हैवान छुपा हुआ है।

जमीर से याद आया तुम तो जानते हो ना उसे?
तुम्हारे अंदर मौजूद है या वो भी बिका हुआ है।

मनोज शिंदे
BE CIVIL

लाखों में हजारों में मेरी एक प्यारी बहना हो

लाखों में हजारों में मेरी एक प्यारी बहना हो
लाखों में हजारों में मेरी एक प्यारी बहना हो ।
भाई को प्यार करने वाली एक बहना हो ॥

बड़ी हो तो मां बाप की डांट से बचाने वाली ।
छोटी हो तो हमारे पीठ पीछे छुपने वाली ॥

बड़ी हो तो चुपचाप हमारी पॉकेट में पैसे रखने वाली ।
छोटी हो तो चुपचाप पैसे निकाल लेने वाली ॥

छोटी हो या बड़ी छोटी-छोटी बातों पर लड़ने वाली ।
लाखों में हजारों में मेरी एक प्यारी बहना हो ॥

बड़ी हो तो गलती पर हमारे कान खींचने वाली ।
छोटी हो तुम अपनी गलती पर सॉरी कहने वाली ॥

खुद से ज्यादा हमें प्यार करने वाली ।
लाखों में हजारों में मेरी एक प्यारी बहना हो ।

पद्मावती पाटिल
TE E&TC





स्वप्नप्रधुन



॥ कोई सोच नहीं ॥

क्या करे ऐसे गम का,
जों जिंदगी को रुलाती है ।
क्या करे ऐसे जश्न का,
जों जिंदगी को हसाती है ।

खोने का कोई डर नहीं ,
क्योंकीं पाने कि कोई सोच नहीं,
जिंदगी ने तो हमें बहुत कुछ दिया,
लेकिन लेने कि कोई सोच नहीं ।

सबकुछ खोकर जों मिल जाता है,
उसे हम अपना ताज कहते हैं,
न खोकर जो मिल जाता है,
उसे हम अपनी जन्नत कहते हैं ।

पुरी मजा लेते हैं, हम इस जन्नत का,
क्योंकीं खोने का कोई डर नहीं,
जिंदगी ने तों हमें बहुत कुछ दिया,
लेकिन लेने कि कोई सोच नहीं ।

प्रसन्न हणामगांव

TE E&TC

कोरोना

कोरोना कहता है, बस नाम ही काफी है
पर मैं कहती हूँ, तेरा समय अब थोडा ही बाकी है।।

मत समझ तू इंसान को बुजदिल
अगर हमने रौद्ररूप धारण कर लिया तो,
तेरा जिना है मुश्किल।।

इन मासूम जिंदगी ने क्या बिगाडा है तेरा
छोड दे पीछा हमारा वरणा पचतायेगा तू बडा।।

हम इंसान इतने डरपोक नहीं की तेरे आनेसे डर जाएंगे
डटकर करेंगे सामना तेरा एक कदम न पीछे आएंगे।।

प्रिया कानडे

TE E&TC





स्वप्नप्रधुन



आदत...

हौसला है मुझ में

छोटीसी खाहिश थी मेरी जो टूट गयी,
ज़िद्दी हूँ मैं बहुत
अभी सपने देखने का हौसला है मुझमें ।

गिर चूका हु बहुत बार चलते चलते,
पर मजबूत हु मैं बहुत
अभी भी 'दौड़ने' का हौसला है मुझमें ।

मोहब्बत की चाल चल कर हर चूका हु मैं,
मगर अभी खोज जारी है
किसी 'दिलवाले' को तलाशने का हौसला है मुझमें ।

छोड़ रहे है लोग साथ मेरा,
कोई बात नहीं
अकेले चलने का हौसला है मुझमें ।

बहुत रुलाया है ज़िन्दगी ने मेरी,
पर अभी बिखरा नही हु मैं
सिर्फ हसने का नहीं, 'हसाने' का भी हौसला है मुझमें ।

मुश्किल हो रहा है एक एक पल काटना,
ये वक़्त भी गुज़र जायेगा
अभी ज़िंदगी 'जीने' का हौसला है मुझमें ।

श्रीनिवास बंदगुल
TE CSE

आदत...

कैसे बताओ तुम्हे, आदत हो गयी है तुम्हारी
कैसे बताओ तुम्हे, आदत हो गयी है तुम्हारी..

ये खूबसूरत दोस्ती इबादत हो गयी है हमारी....
वैसे तो बीते हुए कल में कुछ आपनोने जक़म बोहत दिए थे

वैसे तो बीते हुए कल में कुछ अपनोने जख़म बोहत दिए थे
सुना था वक़्त क साथ जख़म भर जाते है

मगर तेरी इन आदतोने तो निशान भी मिटा दिए....
कहते है आदते इंसान को बिगाड़ देती है

कहते है आदते इंसान को बिगाड़ देती है
मगर ये खुदा उसकी इन आदतोने तो हमें सवार लिया है...

वैसे तो लिखने की आदत बोहत पुरानी है हमारी
मगर तेरी इन आदतोने हमें लिखने की नयी वजह दे दी....

रुनेहा कैरमकोन्डा
TE CIVIL



स्वप्नप्रधुन



सपना

आंखों में सपना लिये...
बस इतना कर पाऊं...
कुछ बन कर...
मां - बाप का नाम रोशन कर जाऊं...

देश की मिट्टी का कर्ज चुकाकर...
भारत रत्न बन जाऊं...
इतना पुण्य कर्म कर पाऊं...
की हर जन्म, यही देश और मां - बाप पा जाऊं...

दिल में बस यही सपने लिए...
बस इतना के पाऊं...
चादर ओढ़ तिरंगे की...
हर बार बिदाई चाहूं...

सौंदर्या कौंडा
BE CSE

रुह

अब इन वादियों में पहाड़ नहीं,
कुछ टुटे पत्थर रह गये हैं बस।
नदियों की आवाज कहीं गाड़ियों के शोर में दब गयी,
गाव उजड़ गये और शहरों के नीचे इंसानियत कहीं धस
गयी।

अब इस शोर में, नफरत खुल के साँस लेती है,
सुकून दबे पांव, दुर निकल जाती है,
भाई भाई की जान लेकर, सडकों पे खुशी बिछाता है।

रुह,
तुम्हे कही दुर ले जाना था मुझे,
लेकिन अब मैं भी गुम हूं,
दुनिया में वो ढूंढने निकला हूं,
जो जिंदा हो, पुरा हो।
सुनो, मेरा इंतज़ार करना,
मोहब्बत की तरह मैं भी फिर आऊंगा,
शायद तब खौफ सिर्फ एक शब्द भर बचे।

विनीत पलगंटी
BE CIVIL





***We Salute the
Corona Warriors***

CORONAVIRUS
[COVID-19]

